



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत की आर्कटिक क्षमता का अन्वेषण

भारत की आर्कटिक क्षमता का अन्वेषण

संदर्भ

- जैसे-जैसे वैश्विक व्यापार में मूलभूत परिवर्तन हो रहे हैं, देश भू-राजनीतिक तनाव, आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान और जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए नई रणनीतियों को अपना रहे हैं।
 - आर्कटिक क्षेत्र जलवायु परिवर्तन एवं भू-राजनीतिक बदलावों के कारण तेजी से रूपांतरित हो रहा है और अब एक महत्वपूर्ण व्यापार तथा ऊर्जा केंद्र के रूप में उभर रहा है।

आर्कटिक क्षेत्र के बारे में

- यह पृथ्वी के सबसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्रों में से एक है, जो पृथ्वी के सबसे उत्तरी हिस्सों को कवर करता है।
- इसमें आर्कटिक महासागर, कनाडा, रूस, ग्रीनलैंड, नॉर्वे, स्वीडन, फ़िनलैंड, आइसलैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका (अलास्का) के भाग सम्मिलित हैं।
- आर्कटिक वैश्विक औसत से लगभग चार गुना तेजी से गर्म हो रहा है, जिससे पर्यावरण और आर्थिक परिवर्तनों के कारण नीतियों और क्षेत्रीय दावों पर प्रभाव पड़ रहा है।
- NASA के अनुसार, आर्कटिक क्षेत्र में बर्फ प्रत्येक दशक में 12.2% घट रही है।

आर्कटिक शासन के लिए वर्तमान रूपरेखा

- आर्कटिक परिषद्:** इसे 1996 में ओटावा घोषणा के तहत स्थापित किया गया था।
 - इसमें आठ राष्ट्र (अमेरिका, कनाडा, रूस, डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फ़िनलैंड और आइसलैंड) सम्मिलित हैं।
 - इसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण और वैज्ञानिक सहयोग को बढ़ावा देना है।
- संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (UNCLOS):** यह आर्कटिक महासागर में समुद्री सीमाओं और संसाधनों के अधिकारों को नियंत्रित करता है।
 - यह विवादों को सुलझाने के लिए कानूनी रूपरेखा प्रदान करता है लेकिन जलवायु परिवर्तन या स्वदेशी अधिकारों जैसे व्यापक मुद्दों को संबोधित नहीं करता है।
- स्वालबार्ड संधि (1920):** यह नॉर्वे को स्वालबार्ड द्वीपसमूह पर संप्रभुता प्रदान करती है, जबकि अन्य हस्ताक्षरकर्ता देशों को इसके संसाधनों तक पहुँचने की अनुमति देती है।
 - यह आर्कटिक से संबंधित कुछ बाध्यकारी समझौतों में से एक है, लेकिन इसका दायरा सीमित है।

आर्कटिक क्षेत्र का महत्व

- प्राकृतिक संसाधन:** अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार, आर्कटिक क्षेत्र में विश्व के 13% अज्ञात तेल भंडार और 30% प्राकृतिक गैस भंडार हैं।
 - बर्फीले क्षेत्रों के पीछे हटने से ये संसाधन अधिक सुलभ हो रहे हैं, जिससे विभिन्न राष्ट्रों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है।
- नए नौवहन मार्ग:** नॉर्थर्न सी रूट (NSR) और नॉर्थवेस्ट पैसेज जैसे मार्ग सुएज और पनामा नहरों के व्यवहार्य विकल्प बन रहे हैं।
 - NSR पर माल परिवहन 2010 में 41,000 टन से बढ़कर 2024 में 37.9 मिलियन टन हो गया है, जिससे यह एक महत्वपूर्ण वैश्विक व्यापार मार्ग बनता जा रहा है।

भारत के लिए आर्कटिक की रणनीतिक प्रासंगिकता

- नॉर्थर्न सी रूट (NSR): भारत की NSR में रुचि उसके दीर्घकालिक समुद्री व्यापार को बढ़ाने और माल डुलाई लागत को कम करने के लक्ष्य से मेल खाती है।
 - NSR अटलांटिक और प्रशांत महासागरों को जोड़ता है और यह यूरोप और एशिया के बीच सबसे छोटा व्यापार मार्ग है।
- ऊर्जा और संसाधन: आर्कटिक क्षेत्र में विशाल तेल, गैस, और दुर्लभ पृथक्षी खनिज भंडार हैं, जो भारत की ऊर्जा सुरक्षा और तकनीकी प्रगति में योगदान कर सकते हैं।
- भू-राजनीतिक लाभ: भारत 2013 से आर्कटिक परिषद् में ऑब्जर्वर रहा है और इस क्षेत्र में संसाधनों के समान वितरण और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए अपना पक्ष रख सकता है।

भारत की आर्कटिक क्षेत्र में भागीदारी

- प्रारंभिक भागीदारी: भारत ने स्वालबार्ड संधि पर हस्ताक्षर किए, जिससे आर्कटिक के प्रति उसकी प्रारंभिक भागीदारी स्पष्ट होती है।
 - भारत उन कुछ विकासशील देशों में से एक है जिनके पास स्वालबार्ड, नॉर्वे में 2008 में स्थापित हिमाद्री अनुसंधान केंद्र है।
- वैज्ञानिक योगदान: भारत राष्ट्रीय ध्रुवीय और महासागर अनुसंधान केंद्र (NCPOR) के माध्यम से जलवायु पैटर्न, समुद्री जैव विविधता और हिमनद गतिशीलता पर वैज्ञानिक अध्ययन करता है।
 - भारत की आर्कटिक नीति (2022), जिसका शीर्षक 'India and the Arctic' है, सतत विकास के लिए साझेदारी स्थापित करने पर केंद्रित है।
- आर्कटिक सर्कल इंडिया फोरम, 2025 (मई 2025 में अपेक्षित): यह भारत की आर्कटिक नीति को क्षेत्रीय और वैश्विक हितों के अनुरूप करने का एक अद्वितीय अवसर प्रदान करता है।
 - चर्चा संभावित रूप से भारत के 'पोलर एंबेसडर' नियुक्त करने का मार्ग प्रशस्त कर सकती है, जिससे आर्कटिक क्षेत्र में भारत की भागीदारी को सुदृढ़ किया जा सके।

चुनौतियाँ और चिंताएँ

- पर्यावरणीय चिंताएँ: आर्कटिक पृथक्षी के सबसे नाजुक पारिस्थितिक तंत्रों में से एक है और बढ़ती गतिविधि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को और बढ़ा सकती है।
 - Nature Climate Change* की रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में वैश्विक तापमान औद्योगिक पूर्व-स्तर से 1.5°C अधिक हो गया, जो पेरिस समझौते के लक्ष्यों से संभावित दीर्घकालिक विचलन का संकेत देता है।
 - भारत को अपनी वाणिज्यिक रुचियों और वैश्विक स्थिरता प्रतिबद्धताओं के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है।
- बुनियादी ढांचा विकास: आर्कटिक जलमार्गों को नेविगेट करने के लिए विशेषज्ञ आइस-ब्रेकिंग बेड़े और ध्रुवीय तैयार जहाजों की आवश्यकता होती है।
 - संघ बजट 2025-26 में \$3 बिलियन समुद्री विकास के लिए आवंटित किए गए हैं, जिसमें आर्कटिक-विशिष्ट जहाज निर्माण में निवेश शामिल है।
- क्षेत्रीय विवाद: UNCLOS के अंतर्गत, देश समुद्र तल पर 200 समुद्री मील EEZ से आगे क्षेत्रीय दावा कर सकते हैं यदि वे सिद्ध कर सकें कि यह उनके महाद्वीपीय शेल्फ का प्राकृतिक विस्तार है।
 - रूस, कनाडा और डेनमार्क (ग्रीनलैंड के माध्यम से) ने UNCLOS के तहत अपने समुद्री सीमा अधिकार बढ़ाने के लिए दावे प्रस्तुत किए हैं।

- अमेरिका, जिसने *UNCLOS* की पुष्टि नहीं की है, अपने दावों को साबित करने में सीमित विकल्प रखता है।
- इस बीच, रूस ने कानूनी प्रावधानों और सैन्य रणनीति का उपयोग करके अपने दावों को मजबूत किया है, जिससे पश्चिमी हितों को चुनौती मिल रही है।

भारत की रणनीतिक दुविधा

- **रूस के साथ साझेदारी:** रूस, जिसकी आर्कटिक विशेषज्ञता व्यापक है, *NSR* के अन्वेषण में भारत का स्वाभाविक भागीदार हो सकता है।
 - चेन्हाई-व्लादिवोस्तोक समुद्री गलियारा *Pevek, Tiksi*, और *Sabetta* जैसे *NSR* बंदरगाहों के लिए प्रवेशद्वार के रूप में कार्य कर सकता है।
- **भू-राजनीतिक प्रभाव:** रूस के साथ गठबंधन करने से अनजाने में चीन के पोलर सिल्क रोड, जो उसकी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का एक उत्तरी विस्तार है, को समर्थन मिल सकता है।
 - इससे चीन को आर्कटिक मार्गों पर अधिक नियंत्रण प्राप्त हो सकता है, जिससे मलकका जलडमरुमध्य जैसे संकरे समुद्री मार्गों को टाला जा सकता है।
- **पश्चिमी हितों के साथ संतुलन बनाना:** अमेरिका और पश्चिमी सहयोगियों के साथ साझेदारी करने से रूस अलग-थलग हो सकता है, जिससे आर्कटिक संसाधनों पर भारत का प्रभाव कम हो सकता है।
 - जापान और दक्षिण कोरिया को शामिल करने वाला एक संतुलित दृष्टिकोण सिनो-रूसी सहयोग का प्रभाव कम कर सकता है।

आगे की राह

- **आर्कटिक नीति को सुव्यवस्थित करना:** भारत की आर्कटिक नीति (2022) को क्षमता निर्माण और तकनीकी नवाचार सहित कार्रवाई योग्य लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- **स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देना:** भारत को आर्कटिक में पर्यावरण के अनुकूल संसाधन निष्कर्षण और जलवायु-प्रतिरोधी बुनियादी ढाँचे का समर्थन करना चाहिए।
- **अनुसंधान और विकास को मजबूत करना:** आर्कटिक अनुसंधान कार्यक्रमों का विस्तार जलवायु परिवर्तन और इसके वैश्विक प्रभावों के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान कर सकता है।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** भारत को आर्कटिक राज्यों और अन्य पर्यवेक्षक देशों के साथ साझेदारी को मजबूत करने के लिए बहुपक्षीय वार्ता में शामिल होना चाहिए।
 - रूस, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों के साथ सहयोग करने से क्षेत्र में भारत की रणनीतिक उपस्थिति बढ़ सकती है।

निष्कर्ष

- आर्कटिक क्षेत्र में भारत की क्षमता बहुत बड़ी है, जिसमें व्यापार, ऊर्जा और वैज्ञानिक अनुसंधान सम्मिलित हैं।
- स्थायित्व और बहुपक्षीय सहयोग को प्राथमिकता देने वाले संतुलित दृष्टिकोण को अपनाकर, भारत आर्कटिक के भविष्य को आकार देने में स्वयं को एक प्रमुख अभिकर्ता के रूप में स्थापित कर सकता है।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: आर्कटिक क्षेत्र में अपनी क्षमता का पता लगाते हुए भारत अपनी आर्थिक महत्वाकांक्षाओं एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारियों के बीच रणनीतिक संतुलन कैसे बना सकता है, और भारत की आर्कटिक रणनीति को आकार देने में बहुपक्षीय सहयोग क्या भूमिका निभा सकता है?